IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 4, Issue 3, April 2021

fp=dV d èkkfed LFky ,o mudh egÙkk

Mk- dhfr 'kDyk
असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, जनपद चित्रकूट (उ.प्र.)

अपनी परिधि में दो प्रान्तों की सीमाओं को समेंटे हुये चित्रकूट का भूभाग धार्मिक स्थल के रूप में लोकविदित है। रामायण काल में दण्डकारण्यश नाम से सुप्रसिद्ध यह क्षेत्र धार्मिक क्रियाकलापों तथा ऋषि–मुनियों की तपोस्थली रहा है। चित्रकूट का नामकरण ''चित्र'' एवं ''कूट'' दो शब्दों के मिलने से हुआ है। चित्र का शाब्दिक अर्थ षविभिन्न रंगयुक्तष तथा कूट का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत शिखर' होता है। इस प्रकार चित्रकूट का शाब्दिक अर्थ हुआ ''विभिन्न रंगयुक्त शैलों वाला पर्वत शिखर''।[2]

जनश्रुति के अनुसार भगवान श्रीराम के चरणचिन्हों से अलंकृत चित्रकूटधाम देश का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र है। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में संयुक्त रूप से फैली हुयी विन्ध्य पर्वत श्रंखला से घिरा हुआ यह भू–भाग इलाहाबाद के दक्षिण–पश्चिम में लगभग 130 किमी0 की दूरी पर पयस्वनी नदी के सुरम्य तट पर अवस्थित है। अपनी प्राकृतिक सुषमा तथा धार्मिकता के कारण सदैव से ही यह स्थल ऋषि–मुनियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है तथा ऐतिहासिक काल में पृथक–पृथक काल खण्डों में चेदि, जुझौती, चिचिटों तथा बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत समाहित था।[3]

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की बात करें तो भारत के अन्य प्रागैतिहासिक स्थलों की भाति चित्रकूट तथा समीपवर्ती क्षेत्रों से प्राचीन मानव के प्रमाण पाषाणोपकरणों के माध्यम से प्राप्त हुये हैं। डॉ० पी.सी. पन्त[4] एवं प्रो. जे.एन. पाण्डेय जी[5] ने जनपद के विभिन्न स्थलों से पुरापाषणिक उपकरण प्राप्त किये हैं। देश के विभिन्न भागों की तरह जनपद चित्रकूट से भी शैलचित्र प्राप्त हये हैं। प्रथमतः काकवर्न[6] महोदय ने 1883 ई. में चित्रकूट जनपद के हनुमानधारा, मारकुण्डी एवं मझगवां से शैलचित्रों की खोज की। इसके पश्चात सन् 1907 ई0 में बांदा में कार्यरत तत्कालीन आई.सी.एस. अधिकारी सी.ए. सिल्वेराड[7] महोदय ने सरहट, मलवा, कुरियाकुण्ड, खरपटिया, अमवां, उल्डन और बरगढ़ से गेरूवे रंग के चित्रित शिलाश्रयों को खोजा। कालान्तर में इन्हीं अनगढ़ पाशाणोपकरणों से झांकती हुयो कला क्षेत्र विशेष में सम्पन्न प्रतिमाओं एवं मन्दिरों के निर्माण के रूप में विकसित होती गई।

चित्रकूट परिक्षेत्र में स्थित धार्मिक स्थलों यथा–रामघाट, सीतापुर, कामदगिरि, हनुमानधारा, मत्स्यगजेन्द्र स्वामी मन्दिर, स्फटिक शिला, रामदर्शन, सती अनुसूइया आश्रम, लक्ष्मण पहाड़ी, गुप्तगोदावरी, गणेशबाग, राजापुर आदि का पर्यटकोचित विकास हो चुका है तथा ये सभी स्थल उत्तर प्रदेश के धार्मिक पर्यटक स्थलों की सूची में अपना स्थान बना चुके हैं।[8] इस शोध पत्र में जनपद के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यमान उन देवालयों को उघ्द्घाटित करने का प्रयास किया जायेगा जो ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व रखते हैं किन्तु आम जनमानस के आवागमन से अछूते हैं। इन स्थलों का पर्यटकोचित विकास कर जनपद में पर्यटक स्थलों का विस्तारीकरण किया जा सकता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 4, Issue 3, April 2021

cjgk dkVjk dk f'ko efUnj

जनपद की मऊ तहसील मुख्यालय से उत्तर पूर्व दिशा में लगभग 13 किमी. दूर यमुना नदी के तट पर यह मन्दिर ध्वस्त अवस्था में विद्यमान है।[9] इस शिव मन्दिर को प्रथमतः मारखम किट्टो[10] महोदय ने उघ्द्घाटित किया था। सन् 1883–85 ई. के आस पास जनरल कनिघंम[11] ने इसे देखा तथा इसे बड़देवल का महान शिव मन्दिर नाम दिया। इसे ष्ऊशा प्रद्युम्नष् की प्रेमकथा से भी जोडा गया है। श्रीमद् भागवत कथा के अनुसार भगवान श्री कृश्ण के प्रपौत्र प्रद्युम्न की राजधानी प्रद्युम्नपुर (वर्तमान परदवां) थी तथा श्रोणितपुर वाणासुर की राजधानी थी एवं कोटरा बाणासुर की माँ का नाम था। अपनी माँ की पूजा के निमित्त उसने इस मन्दिर का निर्माण कराया था।[12] कालान्तर में चन्देल शासकों ने इस मन्दिर का पुनरूद्धार किया तथा अपनी शैली में मन्दिर का निर्माण कराया।[13]

वर्तमान में यह ध्वस्त शिव मन्दिर स्थानीय लोगों के बीच बरहा कोटरा के महादेव मन्दिर के नाम से जाना जाता है जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार के अधिनियम 1958ए के अन्तर्गत संरक्षित स्मारक है। मन्दिर 19 मीटर लम्बें 12 मीटर चौडें एवं 2 मीटर ऊंचे पत्थर के विशाल चबूतरे के उपर निर्मित है, जिसका प्रवेश द्वार 4.20 मीटर ऊँचा है जबकि इसमें 1.88 मीटर ऊँचे दो अलंकृत खम्भे हैं। मन्दिर का शिखर एवं छत ध्वस्त है, जबकि गर्भगृह में 1.10 मीटर ऊँचा एक पाषाण निर्मित शिवलिंग स्थापित है। प्रवेश द्वार के दो खम्भों के अतिरिक्त अन्य खम्भें भी मण्डप में विद्यमान हैं। मन्दिर में लगे खम्भे चार भागों–कुम्भिका, मध्यस्तम्भ, अर्द्धकमलचन्द्र एवं शीर्श में विभाजित है। शीशं पर उड़ता हुआ गुयक भी विद्यमान है जिस पर छत के पत्थर, कड़ी व बीम रखी गई है। स्तम्भों के बीच की दूरी सामान्यतः दो मीटर है। मन्दिर की दीवालों पर सप्तमातृका, अप्सराओं, शिव एवं उनके परिवार से सम्बन्धित प्रतिमायें तथा खजुराहो के समान कुछेक कमनीय मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण हैं। मन्दिर के टूटे हुये पैनल मन्दिर परिसर में चतुर्दिक बिखरे पड़े हुये है।

_f"k;u d efUnj

बरहा कोटरा ग्राम से लगभग । किमी. दक्षिण दिशा में जंगल के बीचोबीच ऋषियन नामक सुरम्य स्थल विद्यमान है। स्थानीय लोगों के अनुसार जंगल की ऊपरी पहाडियों पर आज भी ऋषि–मुनि तपस्या कर रहे हैं। सम्भवतः ऋषि तपस्या के आधार पर ही इसे ऋषियन नाम दिया गया है। यह स्थल भी भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के अधिनियम 1958ए के अन्तर्गत संरक्षित स्मारक है। यहां पर अनेकों ध्वस्त स्मारक, दो ध्वस्त मन्दिर, दो शैलोत्कृत गुफायें, शिवलिंग तथा जल श्रोत विद्यमान हैं। इस स्थल को प्रथमतः जनरल कनिंघम[14] तथा ए0 ''यूहरर'' महोदय ने संसूचित किया था।

यहां पर विद्यमान प्रथम मन्दिर लगभग 23 मीटर लम्बें, 18 मीटर चौड़ें एवं 2 मीटर ऊंचे पक्के चबूतरे पर निर्मित किया गया है। मन्दिर के द्वार में 2 खम्भें तथा गर्भगृह में 4 खम्भे विद्यमान है। गर्भगृह के द्वार के चौखट पर देवियों की प्रतिमायें उत्कीर्ण है तथा उनके पास दोनों ओर एक–एक सहायिका उपस्थित हैं। दूसरे मन्दिर का केवल गर्भगृह ही शेष बचा है जिसके प्रवेश द्वार पर 1.80 मीटर ऊंचे दो खम्भें हैं जो सामान्यतः सादे ही हैं। ऋषियन में विद्यमान गुफाओं में से बडी गुफा में प्रवेश पश्चिम दिशा से जबकि छोटी गुफा में प्रवेश पूर्व दिशा से होता है। छोटी गुफा से जलस्रोत निकलता है तथा इसके अन्दर शिवलिंग स्थापित है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 4, Issue 3, April 2021

yk[kjh dk f'ko efUnj

जनपद की मऊ तहसील मुख्यालय से लगभग 15 किमी. पश्चिम दिशा की ओर लोखरी नामक पुरातात्विक स्थल विद्यमान है। इस स्थल को प्रथमतः जनरल कनिंघम[16] ने संसूचित किया था। इस ग्राम की दक्षिणी पहाड़ी में एक प्राचीन किले के ध्वंसावशेष विद्यमान है। इस किले के उत्तर में लगभग 80 मीटर ऊंची पहाड़ी पर एक शैलोत्कृत शिव गुफा विद्यमान है जिसका आकार लगभग 6 मीटर ग 4.75 मीटर ग 3.75 मीटर है। गुफा के अन्दर 35 सेमी. योनिपीठिका पर 60 सेमी. ऊंचा पाषाण निर्मित शिवलिंग स्थापित है।

jkeuxj dk f'ko efUnj

जनपद के रामनगर ब्लाक मुख्यालय के ठीक सामने एक तालाब के किनारे स्थित यह शिव मन्दिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार के अधिनियम 1958ए के अन्तर्गत संरक्षित स्मारक है। लाल बलुवा पत्थरों से निर्मित इस ध्वस्त मन्दिर में 13 स्तम्भहैं। मन्दिर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में है जहां पर नन्दी विराजमान हैं। मन्दिर 37.40 मीटर ग 23 मीटर ग 1.70 मीटर आकार के पक्के चबूतरे पर निर्मित है। चबूतरे के चतुर्दिक बने कोटरों में शिव, पार्वती, गणेश, भैरव व चामुण्डा की खण्डित प्रतिमायें विद्यमान है। मन्दिा में शिव की मुख्य प्रतिमा नहीं है किन्तु गर्भगृह में एक छोटा सा शिवलिंग स्थापित है। मन्दिर से 40 मीटर दक्षिण की ओर 16.45 मीटर ग 9.75 मीटर ग 1.50 मीटर आकार के पक्के चबूतरे पर 4.40 मीटर वर्गाकार के तीन कक्ष बने हुये हैं। मन्दिर परिसर में एक जैन प्रतिमा भी विद्यमान है।

nohiqj dk noh efUnj

रामनगर से 2 किमी0 पूर्व दिशा की ओर इटहा देवीपुर ग्राम में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या (एन.एच. 76) के किनारे बलुवा पत्थर से निर्मित देवी जी का प्राचीन मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर का गर्भगृह 2.50 मीटर ग 2.50 मीटर ग 2.50 मीटर आकार का है। गर्भगृह में एक प्राचीन देवी प्रतिमा तथा सप्तमातृकाओं की पाशाण प्रतिमायें विद्यमान है। मन्दिर के ध्वंसावशेष समीप ही बिखरे पड़े है।

ykykiqj dk vlkoj ekrk efUnj

कर्वी से लगभग 25 किमी0 पूर्व दिशा में राष्ट्रीय राजामार्ग संख्या (एन.एच. 76) के किनारे लालापुर नामक ग्राम की पहाड़ी में महर्षि बाल्मीकि का आश्रम है। यहाँ 50 मीटर ऊँची पहाड़ी पर बाल्मीकि मन्दिर, बाल्मीकि तपस्या गुफा, सीता रसोई, असावर देवी मन्दिर, हनुमानगढ़ एवं लवकुश आश्रम दर्शनीय स्थल हैं। असावर देवी मन्दिर के गर्भगृह में महिषासुर मर्दिनी की एक प्राचीन पाषाण प्रतिमा स्थापित है।

pj dk lkeukFk efUnj

लालापुर के ही समीप चर नामक ग्राम की दक्षिणी पहाड़ी पर सोमनाथ मन्दिर के भग्नावशेष विद्यमान है। मन्दिर का गर्भगृह 4 मीटर X 2.5 मीटर एक्स 5 मीटर आकार का है। गर्भगृह में 1.5 मीटर ऊचाई के 6 खम्भे विद्यमान हैं। मन्दिर के ध्वस्त अवशेषों के साथ यहां पर शिव, पार्वती, उमामाहेश्वर, गणेश, शेषशायी विश्णु सहित सैकडों प्रतिमायें खण्डित अवस्था में मन्दिर परिसर के चतुर्दिक रखी हुई है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 4, Issue 3, April 2021

चित्रकूट का धार्मिक महत्व प्राचीन काल से रहा है तथा आज भी अबाध गति से धार्मिक पर्यटकों का आवागमन जारी है, किन्तु क्षेत्र विशेष के लौकिक महत्व में अभिवृद्धि की आवश्यकता है। धार्मिक स्थलों में पर्यटन का विस्तार निश्चित रूप से क्षेत्र के लौकिक विकास हेतु मील का पत्थर साबित होगा। उपरोक्त वर्णित जनपद के समस्त ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों की ऐतिहासिकता को नष्ट किये बिना उनका पर्यटकोचित विकास करने की आवश्यकता है। उन सुदूर ग्रामीण वनाच्छादित स्थलों तक पहुंचने हेतु सुगम मार्गों तथा यातायात के साधनों सहित पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था के उपाय करने होंगे। यदि हम इन स्थलों को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित कर पाये तो क्षेत्र का ऐतिहासिक महत्व तो बढेगा ही साथ ही पर्यटन क्षेत्र से जुड़े व्यवसायों में रोजगार का सृजन होगा। साथ ही सरकार के राजस्व में अभिवृद्धि भी हो सकेगी। निश्चित रूप से यह एक कठिन कार्य होगा परन्तु दृढ इच्छा शक्ति एवं समुचित क्रियान्वयन से असम्भव कार्य भी सफल हुये हैं।

I UnHk Iph

1. श्रीवास्तव रमेश चन्द्र ष्बुन्देलखण्ड साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभवष् पृ. 155
2. उद्धृत ''चित्रकूट'' उत्तर प्रदेश पर्यटन बुकलेट, पर्यटन निदेशालय, सी 13, विपिन खण्ड गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र.) पृ. 02
3. त्रिवेदी एस.डी. ''बुन्देलखण्ड का पुरातत्व'' झांसी 1984, पृ. 01
4. डॉ. पन्त पी.सी. ''प्री हिस्टोरिक उ.प्र.'' दिल्ली 1982, पृ. 38, 140
5. डॉ. पाण्डेय जयनारायण ''प्री हिस्टोरिक एक्सप्लोरेशन इन बांदा डिस्ट्रिक्ट ऑफ उ.प्र.'', पृ 335–47
6. ज.ए.सो.बं. वाल्यूम टएए पृ. 21. प्राग्धारा अंक–6
7. सिल्वेराड सी.ए. 'रॉक ड्राइंग इन बांदा डिस्ट्रिक्ट' ज.ए.सो.बं. 1960, जिल्द 08, पृ. 567–70
8. उद्धृत ''चित्रकूट'' उत्तर प्रदेश पर्यटन बुकलेट, पर्यटन निदेशालय, सी 13. विपिन खण्ड गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र.) पृ. 5–13
9. वरूण डी.पी. द्धसंपा. ऋ ''बांदा गजेटियर'' इलाहाबाद 1988, पृ. 281
10. किट्टा मारखम, 'इलेक्ट्रोशन ऑफ इण्डियन आर्किटेक्चर' कलकत्ता 1938, पृ. 13
11. कनिंघम, ''ए.एस.आई. रिपोर्ट'' भाग 21. पू. 5–7
12. श्रीमद्भागवत गीता प्रेस 10/5
13. डॉ. पाठक संजीव षचित्रकूट का इतिहास और कला स्थापत्यष् विशू प्रकाशन मेरठ 2010. पृ. 58
14. कनिंघम, ''ए.एस.आई. रिपोर्ट'' भाग 21, पृ. 5–7
15. ''यूहरर ए, ''मोनुमेन्टल एण्टीक्यूटीज एण्ड इंसक्रिप्शन इन द नार्दर्न प्राविंसेज एण्ड अवध'' इलाहाबाद 1981, पृ. 154–155
16. कनिंघम, ''ए, एस. आई. रिपोर्ट'' भाग 10, पृ. 10–15